आचार्य रविषेण

जीवन-परिचय : आचार्य रविषेण ने अपने संघ और गण-गच्छादि का कोई उल्लेख नहीं किया, परन्तु अन्त में सेन नाम होने से वे सेनसंघ के विद्वान जान पड़ते हैं। इन्द्रगुरु के शिष्य दिवाकर यति, दिवाकर यति के शिष्य अर्हन्मुनि, अर्हन्मुनि के शिष्य लक्ष्मणसेन और लक्ष्मणसेन के शिष्य रविषेण थे। इसके सिवाय इन्होंने अपना कोई परिचय नहीं दिया है।

रविषेणाचार्य का समय आठवी नौवीं शती है।

रचना-परिचय : आपके द्वारा एक ही ग्रन्थ की रचना हुई है—

1. पद्मचरित (पद्मपुराण) : रविषेणाचार्य के द्वारा रचित एक मात्र कृति पद्मचरित या पद्मपुराण है, जो संस्कृत भाषा का एक सुन्दर चरित्र ग्रन्थ है। इसमें 123 पर्व हैं जिनकी श्लोक संख्या 20,000 के लगभग है। ग्रन्थ में बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत के समय में होनेवाले आठवें बलभद्र राम का चरित वर्णित है। इनके साथ आठवें नारायण लक्ष्मण, भरत, सीता,जनक, अंजना-पवनंजय, भामंडल, हनुमान और राक्षसवंशी रावण, विभीषण और सुग्रीवादि का परिचय दिया गया है और प्रसंगवश अनेक कथानक संकलित हैं।